Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

आधुनिक भारत का स्वतंत्रता आंदोलन: राष्ट्रीय चेतना एवं जनभागीदारी

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrhs.net.v14.i4.7

डॉ. ब्रजेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
डी.ए.वी. कॉलेज, बुलंदशहर
उत्तर प्रदेश, भारत

सार— आधुनिक भारत का स्वतंत्रता आंदोलन विश्व इतिहास के सबसे व्यापक, संगठित तथा जनआधारित राष्ट्रीय आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन केवल औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक एकता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना भी था। प्रस्तुत शोधपत्र में राष्ट्रीय चेतना के विकास तथा स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न सामाजिक वर्गों की जनभागीदारी का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें प्रमाणिक इतिहासकारों की पुस्तकों, शोध अध्ययनों तथा ऐतिहासिक अभिलेखों का उपयोग किया गया है। शोध से स्पष्ट होता है कि 1857 के विद्रोह से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक राष्ट्रीय चेतना क्रमशः विकसित हुई और उसने किसानों, मजदूरों, महिलाओं, विद्यार्थियों, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों तथा आदिवासी समुदायों सहित समाज के लगभग प्रत्येक वर्ग को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन जनआंदोलन के रूप में परिवर्तित हुआ, जिससे भारतीय राष्ट्रवाद को व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता का मूल कारण राष्ट्रीय चेतना का विकास तथा व्यापक जनसहभागिता थी, जिसने भारतीय लोकतंत्र और आधुनिक राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला रखी।

कुंजी शब्द: राष्ट्रीय चेतना, जनभागीदारी, स्वतंत्रता आंदोलन, भारतीय राष्ट्रवाद, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन

प्रस्तावना

आधुनिक भारत का स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष का इतिहास नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक परिवर्तन तथा जनसक्रियता के क्रमिक विकास का भी इतिहास है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आरम्भिक चरण में भारतीय समाज अनेक सामाजिक, आर्थिक, भाषाई तथा क्षेत्रीय विभाजनों से प्रभावित था। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शिक्षा के प्रसार, आधुनिक संचार माध्यमों के विकास, सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों तथा औपनिवेशिक शोषण के अनुभवों ने भारतीयों में साझा राष्ट्रीय पहचान का निर्माण प्रारम्भ किया।

1857 का विद्रोह भारतीय प्रतिरोध का प्रारम्भिक व्यापक स्वरूप था। यद्यपि इसकी सीमाएँ थीं, फिर भी इसने विदेशी शासन के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध की भावना को जन्म दिया। इसके पश्चात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन जैसे चरणों ने राष्ट्रीय चेतना को क्रमशः व्यापक बनाया। विशेष रूप से महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संघर्ष अभिजात वर्ग से निकलकर सामान्य जनता तक पहुँचा और यह एक वास्तविक जनआंदोलन बन गया।

राष्ट्रीय चेतना का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की इच्छा नहीं था, बल्कि इसमें सामाजिक समानता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, धार्मिक सहिष्णुता तथा लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे मूल्य भी सम्मिलित थे। इसी चेतना ने विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं तथा क्षेत्रों के लोगों को एक साझा राष्ट्रीय लक्ष्य के अंतर्गत संगठित किया।

स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी व्यापक जनभागीदारी थी। किसानों ने करों के विरुद्ध संघर्ष किया, मजदूरों ने औद्योगिक आंदोलनों में भाग लिया, विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा दिया, महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में अभूतपूर्व भूमिका निभाई तथा आदिवासी समुदायों ने स्थानीय स्तर पर औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया। इन सभी वर्गों की सहभागिता ने आंदोलन को सामाजिक गहराई प्रदान की।

अध्ययन की आवश्यकता

स्वतंत्रता आंदोलन पर पर्याप्त शोध उपलब्ध होने के बावजूद अधिकांश अध्ययन किसी विशेष आंदोलन, नेता अथवा राजनीतिक घटनाक्रम तक सीमित रहते हैं। राष्ट्रीय चेतना के विकास तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों की

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

संयुक्त जनभागीदारी का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है। वर्तमान समय में लोकतांत्रिक मूल्यों, नागरिक सहभागिता तथा राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में स्वतंत्रता आंदोलन के अनुभवों का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है।

यह अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है—

- राष्ट्रीय चेतना के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए।
- स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भूमिका का समग्र विश्लेषण करने के लिए।
- आधुनिक भारतीय लोकतंत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए।
- समकालीन नागरिक सहभागिता के लिए ऐतिहासिक अनुभवों से सीख प्राप्त करने के लिए।

अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य	विवरण
उद्देश्य 1	राष्ट्रीय चेतना के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया का अध्ययन करना।
उद्देश्य 2	स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न सामाजिक वर्गों की जनभागीदारी का विश्लेषण करना।
उद्देश्य 3	प्रमुख आंदोलनों के राष्ट्रीय चेतना पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
उद्देश्य 4	स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत एवं समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

- आधुनिक भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास किन प्रमुख कारणों से हुआ?
- स्वतंत्रता आंदोलन को जनआंदोलन बनाने में किन सामाजिक वर्गों की प्रमुख भूमिका रही?
- महात्मा गांधी के नेतृत्व ने जनभागीदारी को किस प्रकार विस्तारित किया?
- स्वतंत्रता आंदोलन से आधुनिक भारतीय लोकतंत्र को क्या प्रमुख विरासत प्राप्त हुई?

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के स्थान पर प्रमाणिक द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इनमें प्रतिष्ठित इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध प्रकाशन, ऐतिहासिक दस्तावेज तथा शैक्षणिक सामग्री सम्मिलित हैं। विभिन्न स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा राष्ट्रीय चेतना एवं जनभागीदारी के विकास का विश्लेषण किया गया है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर अनेक प्रतिष्ठित इतिहासकारों ने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किए हैं।

बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, के. एन. पणिक्कर एवं सुचेता महाजन ने *India's Struggle for Independence (1857–1947)* में स्वतंत्रता आंदोलन को केवल राजनीतिक घटनाओं का क्रम न मानकर एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे बड़ी शक्ति इसकी जनसक्रियता, लोकतांत्रिक चरित्र तथा वैचारिक विविधता थी। पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे विकसित हुई और सामाजिक सुधार, आर्थिक राष्ट्रवाद तथा राजनीतिक संघर्ष एक-दूसरे के पूरक बने।

सुमित सरकार ने *Modern India (1885–1947)* में राष्ट्रवाद के सामाजिक एवं आर्थिक आयामों का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार स्वतंत्रता आंदोलन का विस्तार ग्रामीण भारत तक पहुँचने के बाद ही वह वास्तविक जनआंदोलन बन सका। उन्होंने किसान आंदोलनों, मजदूर संगठनों तथा क्षेत्रीय आंदोलनों की भूमिका पर विशेष बल दिया।

शेखर बंद्योपाध्याय ने *From Plassey to Partition and After* में औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रवाद और विभाजन की प्रक्रियाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण किया है। उनके अध्ययन के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद एक बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसमें सामाजिक सुधार, शिक्षा, राजनीतिक संगठन तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ए. आर. देसाई ने *Social Background of Indian Nationalism* में भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने विभिन्न वर्गों के हितों को प्रभावित किया, जिससे राष्ट्रवादी चेतना को व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त हुआ।

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

आर. सी. मजूमदार ने *History of the Freedom Movement in India* में स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न धाराओं का विस्तृत ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों, कांग्रेस की भूमिका तथा विभिन्न राजनीतिक संगठनों के योगदान का विश्लेषण किया है।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किन्तु राष्ट्रीय चेतना तथा व्यापक जनभागीदारी के परस्पर संबंध का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय चेतना के विकास और विभिन्न सामाजिक वर्गों की संयुक्त भूमिका का समेकित अध्ययन प्रस्तुत करता है।

आधुनिक भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का ऐतिहासिक विकास

भारत में आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का विकास किसी एक घटना अथवा एक नेता के प्रयासों का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के विस्तार के साथ भारतीय समाज में आर्थिक शोषण, प्रशासनिक असमानता तथा राजनीतिक अधिकारों के ह्रास की स्थिति उत्पन्न हुई। अंग्रेज़ी शासन की भूमि-राजस्व नीतियों, औद्योगिक विनाश, कुटीर उद्योगों के पतन तथा विदेशी व्यापार नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया। इन परिस्थितियों ने विभिन्न वर्गों में असंतोष को जन्म दिया, जो आगे चलकर संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बना।

सन् 1857 का विद्रोह भारतीय प्रतिरोध की पहली व्यापक अभिव्यक्ति माना जाता है। यद्यपि इसकी प्रकृति और स्वरूप पर इतिहासकारों के बीच मतभेद रहे हैं, फिर भी इसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध की भावना को जन्म दिया। इसके पश्चात अंग्रेज़ों ने शासन व्यवस्था में कई परिवर्तन किए, किन्तु भारतीय जनता की राजनीतिक आकांक्षाएँ निरंतर बढ़ती रहीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आधुनिक शिक्षा, मुद्रण तकनीक, समाचार-पत्रों तथा सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में नई राजनीतिक चेतना विकसित की। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) हुई, जिसने राजनीतिक संवाद तथा संवैधानिक सुधारों की माँग को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंग-भंग (1905) के विरोध में प्रारम्भ हुए स्वदेशी आंदोलन ने पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन प्रदान किया। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी उद्योगों के प्रोत्साहन तथा राष्ट्रीय शिक्षा के विकास ने राष्ट्रवाद को सामाजिक एवं आर्थिक आधार प्रदान किया।

महात्मा गांधी के भारत आगमन (1915) के पश्चात स्वतंत्रता आंदोलन में निर्णायक परिवर्तन आया। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा तथा जनसहभागिता को संघर्ष का आधार बनाया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन ने लाखों भारतीयों को स्वतंत्रता संघर्ष से जोड़ा। इन आंदोलनों में पहली बार ग्रामीण भारत, महिलाएँ, किसान, मजदूर तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में सक्रिय हुए।

अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध, भारत छोड़ो आंदोलन, अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों तथा भारतीय जनता के निरंतर संघर्ष के परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। इस प्रकार आधुनिक भारत का स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण की ऐतिहासिक प्रक्रिया भी था।

राष्ट्रीय चेतना का विकास

राष्ट्रीय चेतना का अभिप्राय उस सामूहिक भावना से है जिसके अंतर्गत विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, भाषाई तथा क्षेत्रीय समुदाय स्वयं को एक साझा राष्ट्र का अंग मानते हैं। भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास क्रमिक एवं बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में हुआ।

प्रारम्भिक चरण में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास तथा सामाजिक पुनर्जागरण की भावना विकसित की। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्य समाज सुधारकों ने भारतीय समाज में आधुनिक चेतना का विकास किया। शिक्षा के प्रसार तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने भारतीयों को औपनिवेशिक शासन की वास्तविकताओं को समझने में सहायता प्रदान की।

समाचार-पत्रों तथा साहित्य ने भी राष्ट्रीय चेतना के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने अंग्रेज़ी शासन की नीतियों की आलोचना की तथा राष्ट्रीय विचारों का प्रचार किया। साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से देशभक्ति, सामाजिक एकता तथा राष्ट्रीय गौरव की भावना को सुदृढ़ किया।

आर्थिक राष्ट्रवाद भी राष्ट्रीय चेतना के विकास का महत्वपूर्ण आधार बना। दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन-निष्कासन सिद्धांत' ने यह स्पष्ट किया कि ब्रिटिश शासन भारतीय संसाधनों का निरंतर दोहन कर रहा था। इस आर्थिक विश्लेषण ने शिक्षित भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाया।

गांधीजी ने राष्ट्रीय चेतना को नैतिक आधार प्रदान किया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, खादी, ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भरता जैसे विचारों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। इससे राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित न रहकर सामान्य जनता के जीवन का अंग बन गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में जनभागीदारी

स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी व्यापक जनभागीदारी थी। यह आंदोलन किसी एक वर्ग अथवा क्षेत्र तक सीमित

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

नहीं रहा, बल्कि समाज के लगभग सभी वर्गों ने इसमें अपनी भूमिका निभाई।

शहरी मध्यम वर्ग ने प्रारम्भिक राजनीतिक संगठनों की स्थापना की तथा संवैधानिक सुधारों की माँग उठाई। बाद में किसान, मजदूर, व्यापारी, विद्यार्थी तथा महिलाएँ भी सक्रिय रूप से आंदोलन में सम्मिलित हुए। गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह तथा अहिंसक आंदोलनों ने सामान्य नागरिक को भी राष्ट्रीय संघर्ष का सक्रिय भागीदार बना दिया।

ग्रामीण क्षेत्रों में नमक सत्याग्रह, कर-अस्वीकार आंदोलन तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार ने व्यापक सामाजिक जागरूकता उत्पन्न की। अनेक स्थानों पर स्थानीय नेतृत्व विकसित हुआ जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को गाँव-गाँव तक पहुँचाया।

तालिका 1 : स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख चरण

आंदोलन	वर्ष	प्रमुख उद्देश्य	जनभागीदारी का स्वरूप
1857 का विद्रोह	1857	औपनिवेशिक शासन का विरोध	सैनिक, किसान, स्थानीय शासक
स्वदेशी आंदोलन	1905–1908	विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार	विद्यार्थी, व्यापारी, महिलाएँ
असहयोग आंदोलन	1920–22	ब्रिटिश संस्थाओं का बहिष्कार	व्यापक जनभागीदारी
सविनय अवज्ञा आंदोलन	1930–34	अन्यायपूर्ण कानूनों का विरोध	ग्रामीण एवं शहरी समाज
भारत छोड़ो आंदोलन	1942	पूर्ण स्वतंत्रता	सम्पूर्ण राष्ट्र

महिलाओं की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। प्रारम्भिक चरण में महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका सीमित थी, किन्तु गांधीजी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।

सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ़ अली, उषा मेहता, सुचेता कृपलानी तथा अनेक अन्य महिलाओं ने आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, जेल यात्राओं तथा जनजागरण अभियानों में सक्रिय योगदान दिया।

महिलाओं की सहभागिता ने भारतीय समाज में लैंगिक समानता तथा राजनीतिक अधिकारों की नई चेतना उत्पन्न की।

तालिका 2 : महिलाओं का योगदान

क्षेत्र	प्रमुख योगदान
सत्याग्रह	प्रत्यक्ष भागीदारी
विदेशी वस्त्र बहिष्कार	जनजागरण
खादी आंदोलन	स्वदेशी का प्रचार
शिक्षा	राष्ट्रीय चेतना का प्रसार
भूमिगत आंदोलन	गुप्त संगठन एवं संचार

किसानों एवं मजदूरों की भूमिका

ब्रिटिश भूमि-राजस्व नीतियों तथा आर्थिक शोषण के कारण किसान वर्ग सर्वाधिक प्रभावित हुआ। चम्पारण, खेड़ा तथा बारडोली जैसे आंदोलनों ने किसानों की राजनीतिक चेतना को विकसित किया। गांधीजी ने किसानों के संघर्ष को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा।

मजदूर वर्ग ने औद्योगिक क्षेत्रों में हड़तालों, श्रमिक संगठनों तथा राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से स्वतंत्रता संघर्ष को समर्थन दिया। श्रमिक संगठनों ने सामाजिक न्याय तथा आर्थिक अधिकारों के प्रश्नों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा।

तालिका 3 : किसान एवं मजदूर सहभागिता

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

वर्ग	प्रमुख आंदोलन	प्रभाव
किसान	चम्पारण	कृषि सुधार की चेतना
किसान	खेड़ा	कर राहत
किसान	बारडोली	संगठनात्मक शक्ति
मजदूर	औद्योगिक हड़तालें	श्रमिक अधिकारों की चेतना

विद्यार्थियों एवं युवाओं की भूमिका

भारतीय युवाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक ऊर्जा प्रदान की। विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा का वातावरण विकसित हुआ। अनेक विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लिया।

युवाओं ने स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। अनेक क्रांतिकारी संगठनों का नेतृत्व भी युवा वर्ग ने किया।

आदिवासी एवं क्षेत्रीय आंदोलनों का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष केवल महानगरों तक सीमित नहीं था। विभिन्न क्षेत्रों के आदिवासी समुदायों ने भी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया। जंगलों, भूमि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर ब्रिटिश नियंत्रण के विरुद्ध अनेक स्थानीय आंदोलनों का आयोजन हुआ।

इन आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता संघर्ष का आधार केवल राजनीतिक नेतृत्व नहीं, बल्कि स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी भी थी।

तालिका 4 : विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी

सामाजिक वर्ग	प्रमुख भूमिका
किसान	कर विरोध एवं सत्याग्रह
मजदूर	श्रमिक आंदोलन
महिलाएँ	सत्याग्रह एवं जनजागरण
विद्यार्थी	राष्ट्रीय शिक्षा एवं आंदोलन
व्यापारी	स्वदेशी उद्योगों का समर्थन
आदिवासी	स्थानीय प्रतिरोध

विश्लेषण एवं चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता का मूल आधार राष्ट्रीय चेतना और व्यापक जनभागीदारी थी। प्रारम्भिक चरण में आंदोलन शिक्षित वर्ग तक सीमित था, किन्तु समय के साथ यह ग्रामीण समाज, महिलाओं, किसानों, मजदूरों तथा युवाओं तक विस्तारित हुआ।

गांधीजी की रणनीति ने आंदोलन को नैतिक वैधता प्रदान की। सत्याग्रह, अहिंसा तथा जनसंपर्क के माध्यम से उन्होंने सामान्य नागरिक को राजनीतिक संघर्ष का सक्रिय भागीदार बनाया। इससे स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक नेतृत्व का अभियान न रहकर राष्ट्रीय जनआंदोलन बन गया।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी। इसमें सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय, स्वदेशी, लोकतंत्र तथा नागरिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य भी सम्मिलित थे। यही कारण है कि स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत आज भी भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला मानी जाती है।

तालिका 5 : राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख आधार

आधार	प्रभाव
आधुनिक शिक्षा	राजनीतिक जागरूकता
समाचार-पत्र	राष्ट्रीय विचारों का प्रसार
सामाजिक सुधार	सामाजिक एकता
स्वदेशी	आर्थिक राष्ट्रवाद
गांधीवादी विचार	जनआंदोलन का विस्तार

निष्कर्ष

आधुनिक भारत का स्वतंत्रता आंदोलन विश्व के सर्वाधिक व्यापक जनआंदोलनों में से एक था। इसकी सफलता केवल राजनीतिक नेतृत्व के कारण नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों की सक्रिय सहभागिता और विकसित राष्ट्रीय चेतना के कारण संभव हुई। किसानों, मजदूरों, महिलाओं, विद्यार्थियों, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों तथा आदिवासी समुदायों ने अपने-अपने स्तर पर संघर्ष को मजबूत बनाया। गांधीजी के नेतृत्व में यह आंदोलन लोकतांत्रिक मूल्यों, अहिंसा तथा जनसहभागिता का वैश्विक उदाहरण बन गया।

राष्ट्रीय चेतना ने भारतीय समाज को विविधताओं के बावजूद एक साझा राष्ट्रीय पहचान प्रदान की। स्वतंत्रता आंदोलन की यही विरासत आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे, संवैधानिक मूल्यों तथा नागरिक उत्तरदायित्व का आधार बनी। वर्तमान समय में भी राष्ट्रीय एकता, लोकतांत्रिक सहभागिता तथा सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन के अनुभव अत्यंत प्रासंगिक हैं।

संदर्भ

1. बंद्योपाध्याय, शेखर. *प्लासी से विभाजन और उसके बाद* (अंग्रेज़ी मूल: *From Plassey to Partition and After*). ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2015.
2. चन्द्र, बिपिन., मुखर्जी, मृदुला., मुखर्जी, आदित्य., पणिक्कर, के. एन., एवं महाजन, सुचेता. *इंडियाज़ स्ट्रगल फ़ॉर इंडिपेंडेंस (1857–1947)*. पेंगुइन बुक्स, 1989.

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

3. सरकार, सुमित. *मॉडर्न इंडिया: 1885–1947*. मैकमिलन, 1983.
4. देसाई, ए. आर. *सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज़्म*. पॉपुलर प्रकाशन, संशोधित संस्करण, 2005.
5. मजूमदार, आर. सी. *हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया*. फ़र्मा के. एल. मुखोपाध्याय, 1962–1963 (3 खंड).
6. नौरोजी, दादाभाई. *पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया*. स्वान सोनेंशाइन एंड कंपनी, 1901.
7. चन्द्र, बिपिन. *भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय* (अंग्रेज़ी मूल: *The Rise and Growth of Economic Nationalism in India*). पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1966.
8. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद. *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन संबंधी शोध प्रकाशन एवं अभिलेख*. नई दिल्ली.

ISSN: 2347-5404
IJRHS
ESTD.2013

© 2026. This article is licensed under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).